॥ श्रीः ॥

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला

46

श्रीमद्भट्टोजिदीक्षितविरचिता

# वैयाकरण-

# सिद्धान्तकौमुदी

श्रीवासुदेवदीक्षितप्रणीतया 'बालमनोरमा'-व्याख्यया समलङ्कृत

सैव

दीपिकाख्य-हिन्दी-व्याख्ययोपेता च

(समासादि-द्विरुक्तान्तः द्वितीयो भागः)


व्याख्याकारः

**श्रीगोपालदत्तपाण्डेयः**

अवकाशप्राप्त उप-शिक्षा निदेशकः (उत्तरप्रदेशस्थः) तथा नैनीतालस्थ-राजकीय-स्नातकोत्तर-महाविद्यालयस्य भूतपूर्वः आचार्यः संस्कृतविभागाध्यक्षश्च



**चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन**

वाराणसी

# भूमिका

सिद्धान्तकौमुदी के द्वितीय भाग को व्याकरण के अध्येताओं के समक्ष उपस्थित करते हुए हर्ष हो रहा है। अनेक कारणों से इसके प्रकाशन में अपेक्षाकृत अधिक विलम्ब हो गया है। फिर भी अध्येताओं की माँग के साथ ही प्रकाशन-संस्था की आतुरता यथासम्भव शीघ्र प्रकाशन करने के लिये प्रेरित करती रही है। प्रस्तुत भाग में समासादि-द्विरुक्तप्रक्रियान्त प्रकरण संकलित है। व्याकरण-शास्त्र की उपादेयता एवम् उसके इतिहास पर प्रथम खण्ड में प्रकाश डाला जा चुका है। अतः यहाँ उसका पुनरावर्तन नहीं किया गया है।

पाणिनि-व्याकरण के प्रक्रिया-ग्रन्थों में सिद्धान्तकौमुदी का एक विशेष स्थान है। उसके अधिक प्रचार होने का कारण लोक में भाषानुकूल वाक्य-योजना के तत्त्वों की अनुकूलता का ग्रहण करना है। इसीलिए अष्टाध्यायी के सूत्रों की क्रम-व्यवस्था न होने पर भी समग्र सूत्रों का समावेश होने के कारण उसमें अष्टाध्यायी की पूर्णता अखण्डित है। ऐसा विदित होता है कि भट्टोजि-दीक्षित के समय में यह प्रवृत्ति चल पड़ी थी कि सिद्ध शब्दों की निष्पन्नता का आकलन एक साथ ही पूर्ण रूप में ज्ञात हो जाय। इस प्रवृत्ति का कारण समय की बचत एवं शब्दनिरुक्ति की प्रक्रिया की व्यावहारिकता को विदित कराना था। वस्तुतः यह प्रक्रिया 'कार्यकाल' पक्ष को अभिलक्षित कर आगे बढ़ने में सफल हुई है। इसका अभ्युदय 'रूपावतार' के लेखक 'धर्मकीर्ति' के समय से हुआ। 'रूपावतार' की लेखन-शैली रूपसिद्धि के लिये बड़ी सरल एवं क्रमानुसारिणी है। रूपावतार के लेखक धर्मकीर्ति का समय अद्यावधि अनिर्णीत है। उसकी अन्तिम सीमा बारहवीं शताब्दी है। इस में यह प्रमाण दिया जाता है कि एक स्थल पर रूपावतार में हरदत्त का नाम से निर्देश किया गया है—**'दीर्घान्त एवायं हरदत्ताभिमतः'**। तथा दूसरा कारण यह भी है कि स्वयं मैत्रेयरक्षित द्वारा 'तन्त्रप्रदीप' में इसका उल्लेख किया गया है—**'रूपावतारे तु णिलोपे प्रत्ययोत्पत्तेः प्रागेव कृते सति एकाच्त्वात् यङ् उदाहृतः—चोचूर्यते'** इति। 'रूपावतार' दो भागों में विभक्त है। पूर्वार्ध में सुबन्त का वर्णन है और वह आठ अवतारों ( अर्थात् प्रकरणों ) में विभक्त है। उत्तरार्ध तिङन्त तथा कृदन्त का परिचायक है। अतः इसी ग्रन्थ को प्रक्रिया-पद्धति का आदिम ग्रन्थ मानना युक्तिसंगत है। यह ग्रन्थ दक्षिण भारत में अधिक प्रसिद्ध

# विषयानुक्रमणिका


| विषयाः | पृष्ठाङ्काः |
|---|---|
| १ अव्ययीभावसमासप्रकरणम् | १ |
| २ तत्पुरुषसमासप्रकरणम् | ४४ |
| ३ बहुव्रीहिसमासप्रकरणम् | २०९ |
| ४ द्वन्द्वसमासप्रकरणम् | २९३ |
| ५ एकशेषप्रकरणम् | ३२८ |
| ६ सर्वसमासशेषप्रकरणम् | ३४१ |
| ७ सर्वसमासान्तप्रकरणम् | ३४५ |
| ८ अलुक्समासप्रकरणम् | ३६४ |
| ९ समासाश्रयविधिप्रकरणम् | ३८७ |
| १० तद्धिते साधारणप्रत्ययाः | ४६४ |
| ११ अपत्याधिकारप्रकरणम् | ४७४ |
| १२ रक्ताद्यर्थकप्रकरणम् | ५७४ |
| १३ चातुरर्थिकप्रकरणम् | ६३६ |
| १४ शैषिकप्रकरणम् | ६५७ |
| १५ प्राग्दीव्यतीयप्रकरणम् | ७६७ |
| १६ प्राग्वहतीय( ठगधिकार )प्रकरणम् | ७८६ |
| १७ प्राग्घतीयप्रकरणम् | ८२३ |
| १८ छ-यदधिकारप्रकरणम् | ८३८ |
| १९ आर्हीयप्रकरणम् | ८५१ |
| २० ठञधिकारे कालाधिकारप्रकरणम् | ८९१ |
| २१ ठञधिकारप्रकरणम् | ९०६ |
| २२ भावकर्मार्थकप्रकरणम् | ९१३ |
| २३ पाञ्चमिकप्रकरणम् | ९३१ |
| २४ मत्वर्थीयप्रकरणम् | ९५६ |
| २५ प्राग्दिशीयप्रकरणम् | १०११ |
| २६ प्रागिवीयप्रकरणम् | १०२४ |
| २७ स्वार्थिकप्रकरणम् | १०६९ |
| २८ द्विरुक्तप्रक्रिया | ११२२ |

( क ) समासादिप्रक्रियान्तसूत्रसूची ११४०
( ख ) ,, ,, वार्तिकसूची ११५२
( ग ) ,, ,, परिभाषासूची ११५६
( घ ) ,, ,, गणपाठः ११५७

## परिशिष्टम्

१ रूपदीपिका ११७२
२ पङ्क्तिदीपिका ११९४
३ शुद्धिपत्रम् १२०५

---

# सङ्केत-निर्देश

## ( क ) साधनिकोपयोगी चिह्न

| | | |
|---|---|---|
| + | — | संयुक्तार्थक |
| ० | — | लोपार्थक |
| = | — | समानार्थक, समान |
| > | — | परिवर्तित, निष्पन्न, सिद्ध |
| √ | — | धातु |
| → | — | सातत्य-सूचक |

## ( ख ) ग्रन्थ-सङ्केत

| | | |
|---|---|---|
| ल० श० शे० | — | लघुशब्देन्दुशेखर |
| पा० सू० | — | पाणिनीय-सूत्र |
| म० भा० | — | महाभाष्य |
| व्या० सि० सु०<br>वै० सि० सु० | — | व्याकरण-सिद्धान्त-सुधानिधि |
| ऋ० सं० | — | ऋक्-संहिता |
| रघु० | — | रघुवंश |
| मत्स्य पु० | — | मत्स्य पुराण |
| उदा० | — | उदाहरण |
| वा० | — | वार्तिक |

---